بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 20.01.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

मेहदीआबाद बर्कीना फ़ासो में नौ अहमदियों की पीड़ादायक शहादत तथा दुःखद घटना का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 20 जनवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

اَشۡھَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ وَاَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَرَسُوۡلُہٗ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ۔ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़, सूरः फ़ातिहः तथा सूरः अल-बक़रः की 155 एवं 156 आयतों की तिलावत तथा अनुवाद के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने इन आयतों के संदर्भ में फ़रमाया- अल्लाह तआला के लिए प्राणों की भेंट पेश करने वालों के लिए अल्लाह तआला का फ़र्मान यह है कि वे मुरदा नहीं बलिक जीवित हैं। अहमदिया जमाअत में गत सौ वर्षों से भी अधिक समय से अल्लाह तआला की राह में जान की क़ुर्बानियाँ पेश की जा रही हैं। उन शहीदों ने जो स्तर पाया है तथा जहाँ उनके स्तर सदैव बढ़ते चले जाने वाले हैं, वहाँ इस दुनिया में भी सदैव के लिए उनके नाम रौशन हैं। अल्लाह तआला के लिए उनका जान देना, न केवल अपने लिए बल्कि जमाअत के जीवन का भी कारण बन रहा है। यही तो हैं जो पीछे रहने वालों के जीवन एवं उन्नतियों का साधन बन रहे हैं तो फिर वे मुरदे किस तरह हो सकते हैं।

अहमदिया जमाअत में जान की यह क़ुर्बानी हज़रत मसीह मौऊद अलै. के दौर में हज़रत साहिबज़ादा सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहब रज़ी. की क़ुर्बानो से शुरु हुई। जान की क़ुर्बानी शुरु में अफ़ग़ानिस्तान तथा उपमहाद्वीप की परिधि में रही। 2005 में अफ़रीक़ा के कांगो देश में एक अहमदी ने केवल जमाअत के लिए अपने प्राणों की बलि दी। परन्तु पिछले दिनों बर्कीना फ़ासो में प्रेम एवं आज्ञाकारिता एवं विश्वास से परिपूर्ण जो नमूना अफ़रीक़न अहमदियों ने दिखाया वह अतुल्य है। उनको अवसर दिया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. की सच्चाई का इंकार कर दो तो हम तुम्हें जीवन दान दे देंगे किन्तु उन लोगों ने जिनका ईमान पहाड़ से अधिक सुदृढ़ लगता है, जवाब दिया कि जान तो एक दिन जानी ही है, आज नहीं तो कल, अतः इसको बचाने के लिए हम अपने ईमान का सौदा नहीं कर सकते। जिस सच्चाई को हमने देख लिया है उसको हम नहीं छोड़ सकते और यूँ एक के बाद दूसरा अपनी जान की क़ुर्बानी करता चला गया, उनकी महिलाएँ तथा बच्चे यह दृश्य देख रहे थे तथा किसी ने कोई हंगामा नहीं किया।

ये वे लोग हैं जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अल. के ज़माने में साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहब शहीद रज़ी. की क़ुर्बानी के बाद अहमदियत की दुनिया में क़ुर्बानियों का एक नया इतिहास रचा है। ये अपने सांसारिक जीवन की बलि देकर सदैव का जीवन प्राप्त करने वाले बन गए। इन्होंने जान, माल तथा समय की क़ुर्बानी के वचन को ऐसा निभाया कि बाद में आकर पहले आने से आगे निकल गए। अल्लाह तआल इनमें से हर एक को उन शुभ सूचनाओं का वारिस बनाए जो अल्लाह तआला ने उसकी राह में क़ुर्बानियाँ करने वालों को दी हैं।

विस्तृत जानकारी के अनुसार बर्कीना फ़ासो का एक नगर डोरी है जहाँ मेहदीआबाद में नई आबादी हुई थी। 11 जनवरी को 9 अहमदी सज्जन पुरुषों को इशा के समय शेष अन्य नमाज़ियों के सामने इस्लाम तथा अहमदियत से इंकार न करने के कारण एक एक करके शहीद कर दिया गया। आठ हथियारबन्द लोग मस्जिद में आए थे। अहमदिया मस्जिद में आने से पहले वहाँ निकट में ही स्थापित वहाबियों की एक मस्जिद में मग़रिब से इशा तक समय व्यतीत किया परन्तु वहाँ किसी को हानि नहीं पहुंचाई। जब ये अहमदिया मस्जिद में आए तो उस समय इशा की अज़ान हो रही थी। अज़ान के बाद मुअज़्ज़न से ऐलान करवाया कि अहमदी लोग जल्दी से मस्जिद में आ जाएँ कुछ लोग आए हैं और उन्होंने कोई बात करनी है। उन्होंने जमाअत अहमदिया की आस्था के बारे में इमाम अल-हाज इब्राहीम बदगा साहब से अनेक प्रश्न किए। इमाम साहब ने बताया कि हम लोग मुसलमान हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानने वाले हैं, हमारा सम्बंध अहमदिया मुस्लिम जमाअत से है, हज़रत ईसा अलै. वफ़ात पा गए हैं तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी हैं।

आतंकवादियों ने कहा कि अहमदी पक्के काफ़िर हैं। फिर उसके साथ जुड़े सिलाई सैन्टर में हज़रत मसीह माऊद अलै. तथा ख़लीफ़ाओं के चित्रों के विषय में पूछा। इमाम साहब ने एक एक चित्र का परिचय करवाया। उन्होंने कहा कि मसीह मौऊद अलै. का दावा (नऊज़ुबिल्लाह) झूठा है, जिसके बाद उन्होंने मस्जिद में मौजूद लगभग 70 नमाज़ियों में से आयु के अनुसार बच्चों, युवाओं तथा बुज़ुर्गों के ग्रुप बनाए, दस बारह लजना भी मौजूद थीं। बड़ी आयु वाले लोगों से कहा कि वे मस्जिद के आंगन में आ जाएँ। एक अपंग आदमी भी थे जिनको उन्होंने मना कर दिया कि तुम किसी काम के नहीं हो, तुम अन्दर ही रहो। शेष लोगों को मस्जिद के आंगन में ले आए और इमाम साहब से कहा कि यदि वे अहमदियत से इंकार कर दें तो उनको जीवन दान दे दिया जाएगा। इमाम साहब ने उत्तर दिया कि मेरा सिर काट दें किन्तु मैं अहमदियत नहीं छोड़ूंगा। आतंकवादियों ने धरती पर लेटा कर उनकी गर्दन पर छुरा रखा तथा गला काटने का प्रयास किया तो उन्होंने कहा कि मुझे खड़ा करके मार दें, तो उन्होंने उनको गोलियाँ मारकर शहीद कर दिया।

आतंकी समझे कि शेष लोग डर के कारण मान जाएँगे और एक बुज़ुर्ग को बुलाकर कहा कि अहमदियत से इंकार करना है अथवा मरना है तो उन्होंने भी यही कहा कि अहमदियत नहीं छोड़ सकता और फिर उनके सिर पर गोलियाँ मारकर उनको भी शहीद कर दिया। इस तरह शेष लोगों को एक एक करके बुलाया और शहीद कर दिया। किसी एक ने भी तनिक सी भी दुर्बलता न दिखाई तथा न ही अहमदियत से इंकार किया। किसी एक का भी ईमान नहीं डगमगाया। सब ने एक दूसरे से बढ़ कर विश्वास एवं वफ़ा तथा

दलेरी व्यक्त की तथा अल्लाह तआला के समक्ष अपने प्राण नियोछावर कर दिए। हर शहीद को लगभग तीन गोलियाँ मारी गईं, इनमें दो जुड़वाँ भाई भी शामिल थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ''तज़करतुश्शहादतैन'' में साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहब शहीद रज़ी. का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तअला उनके जैसे अनेक पैदा कर देगा। अतः हम गवाह हैं कि आज अफ़रीक़ा के रहने वालों ने इसका नमूना दिखा दिया और क़ायम मक़ामी का हक़ अदा कर दिया। आतंकवाद की यह सारी काररवाई डेढ़ घन्टे जारी रही, शेष लोग जिस पीड़ा में रहे होंगे उसका अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके सामने उनके प्यारों को शहीद किया जा रहा था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अब संक्षेप में उन शहीदों के जीवन परिचय पेश करूँगा जिनसे उनके ईमान की सुदृढ़ता का पता चलता है।

इमाम अल-हाज इब्राहीम बदगा साहब- इमाम साहब उस क्षेत्र के सबसे बड़े वहाबी इमाम थे। इमाम साहब एक बड़े विद्वान थे। इस क्षेत्र के लोग तमाशक़ क़बीले से सम्बंध रखते हैं, वे तमाशक़ भाषा के विद्वान थे। अहमदियत से पहले कई गाँव के चीफ़ थे। उस क्षेत्र के बड़े बड़े विद्वान उनके संग बैठने में अपनी शान समझते थे। 1998 में डोरी में नियमबद्ध रूप से अहमदिया मिशन क़ायम होने की सूचना इमाम साहब को पहुंची तो सात लोगों के साथ मिशन हाउस आए तथा भली भांति सत्य की खोज के बाद बैअत की, समझ कर सच्चाई को स्वीकार किया और फिर क़ुर्बानी का उच्चतम नमूना क़ायम किया। निडर दाअी इलल्लाह तथा फ़िदाई अहमदी थे। आपके प्रयासों से पूरे क्षेत्र में अहमदियत फैली तथा कई जमाअतें क़ायम हुईं। तबलीग़ का जुनून था। हत्या की धमकियों के बावजूद अपनी कोशिशें न छोड़ीं। ख़िलाफ़त से भी अत्यंत आज्ञाकारिता का सम्बंध था। लोगों के साथ सुन्दर आचरण से पेश आते तथा दूसरों के लिए क़ुर्बानी करना उनकी विशेषता थी। क्षेत्र के लोग उनका बड़ा सम्मान करते थे। हर माली क़ुर्बानी में सबसे पहले स्वयं क़ुर्बानी करते थे। हर प्रकार की जमाअती गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया करते थे।

हुसैनी आगमाली अईल साहब- 1999 में बैअत की थी अपने गाँव के आरम्भिक अहमदियों में से थे। इस समय ज़ईम अन्सारुल्लाह के रूप में सेवा कर रहे थे। उनका जुड़वाँ भाई अल-हसन आगमानईल साहब भी इस घटना में शहीद हुए हैं। दोनों भाई एक ही दिन दुनिया में आए तथा एक ही दिन दुनिया से गए।

हमीद वआग अब्दुर्रहमान साहब- व्यवसाय की दृष्टि से किसान थ, 1999 में बैअत की थी, दिल के साफ़ तथा विनम्र स्वभाव वाले थे। जमाअत के कामों में अग्रिम पंक्ति में होते थे, इमाम साहब के सहायक थे।

सुलह आग इब्राहीम साहब- एक किसान थे, जमाअत के साथ नमाज़ के पाबन्द थे तथा नियमानुसार चन्दा दिया करते थे, विद्वान थे तथा धार्मिक एवं ज्ञान वर्धक बातचीत किया करते थे, अत्यंत नेक स्वभाव वाले थे।

उसमान आग सोदे साहब- मेहदीआबाद की मस्जिद के निर्माण में बढ़ चढ़ कर भाग लिया, नमाज़ों के पाबन्द थे तथा तहज्जुद नियमबद्ध रूप से अदा किया करते थे। व्यवसाय की दृष्टि से व्यापारी थे, अत्यंत निष्ठावान थे। मुझे भी निरन्तर दुआ के पत्र लिखते थे।

अगाली आगमा गोइल साहब- अपने वालिद साहब के साथ 1999 में अहमदियत क़बूल की, पेशे की दृष्टि से किसान थे। बड़े निष्ठावान अहमदी थे। नमाज़ों तथा चन्दों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया करते थे।

मूसा आग इद्राही साहब- खेती बाड़ी का काम करते थे, तहज्जुद तथा नमाज़ों में नियमबद्ध थे तथा अल्लाह की स्तुति में व्यस्त रहते थे। यह एक निष्ठावान एवं फ़िदाई अहमदी होने का नमूना थे। मुझे निरन्तर पत्र लिखते थे।

आगामो आग अब्दुर्रहमान साहब- शहीदों में सबसे छोटे थे। 1999 में बीस वर्ष की आयु में अहमदियत क़बूल की और फिर जमाअत के साथ श्रद्धा एवं वफ़ा में उन्नति की। अत्यंत निष्ठावान एवं फ़िदाई अहमदी थ। आतंकवादियों को निःसंकोच बताया कि मैं नायब इमाम हूँ। जब आठ दोस्तों को शहीद कर दिया गया तो सबसे छोटे थे किन्तु बड़ी दलेरी से जवाब दिया कि जिस राह पर बजुर्गों ने क़ुर्बानी दी है, मैं भी क़ुर्बान होने के लिए तय्यार हूँ। आतंकवादियों ने निर्दयता से उनके चेहरे पर गोलियाँ मार कर शहीद कर दिया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हर एक के नाम के साथ आग का शब्द लगा हुआ है तथा इस शब्द का अर्थ है सुपुत्र। अतः ये अहमदियत के चमकते सितारे हैं, अपने पीछे एक नमूना छोड़ कर गए हैं। अल्लाह तआला इनके बच्चों को भी ईमान व विश्वास में बढ़ाए। अल्लाह तआला परिजनों को धैर्य एवं साहस दे तथा उनके बुजुर्गों ने जिस उद्देश्य के लिए अपने प्राणों की भेंट दी है उसको समझने की तौफ़ीक़ पाने वाले हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि शहीदों के परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उनको अपने पाँव पर खड़ा करने के लिए ख़िलाफ़त राबिअः के ज़माने में सय्यदना बिलाला फ़ंड क़ायम किया गया था जिससे शहीदों के लिए ख़र्च किया जाता है, जो शहीदों के लिए देना चाहें वे इस फ़ंड में अदायगी करें और यह उन शहीदों पर कोई उपकार नहीं बलिक हमारा कर्त्तव्य है कि उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखें और उनको पूरा करें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक उद्धरण का हवाला देते हुए फ़रमाया कि ये क़ुर्बानी करने वाले इस परीक्षा में पूरे उतरे, अब पीछे रहने वालों की परीक्षा है। अल्लाह तआला हम सबको सामर्थ्य दे कि ईमान एवं विश्वास पर क़ायम रहें। अल्लाह तआला इन शहीदों के स्तरों को बढ़ाए, फल फूल लगाए, जिसके परिणाम स्वरूप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं को दुनिया में फैलता हुआ देखें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में शहीदों की नमाज़े जनाज़ा ग़ायब के साथ डा. करीमुल्लाह ज़ैरवी साहब तथा उनकी पतनी अमतुल लतीफ़ ज़ेरवी साहिबा ऑफ़ अमरीका के भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

وَرَسُوْلُهٗ۔ عِبَادَاللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ
یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131